

3. भारतीय संस्कृति के प्रकाश सतम्भ -गुरु पद्मसंभव"

-श्रीमती स्वर्णलता पराशर

गुरु पद्मसम्भव भारतीय संस्कृति के एक महान् स्तम्भ के रूप में एशिया भर के देशों में जाने जाते हैं। प्राचीन ग्रन्थों में यह भविष्यवाणी थी कि भगवान् बुद्ध के इस संसार से विदा होने के बाद लगभग 12 या 13 सौ वर्षों के भीतर एक महान् सिद्ध और योगी का जन्म होगा जो भारत के बाहर बुद्ध धर्म का प्रचार करेगा।

यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई तथा कालान्तर में 8वीं सदी में पद्मसम्भव जी का जन्म उदयन में राजा इन्द्रभूति के परिवार में हुआ। कहा जाता है कि वे दिव्य शक्ति से कमल से पैदा हुए जिस कारण उनका नाम पद्म सम्भव हुआ और राजा इन्द्रभूति ने उनके दिव्यस्वरूप को देखकर उनका पालन पोषण किया।

अपने बचपन से ही वे एक मेधावी और शक्तिशाली बालक के रूप में प्रसिद्ध हुए और उन्होंने भगवान् बुद्ध की शिक्षा तथा सिद्धान्त को आत्मसात् कर लिया। उस समय नालन्दा विश्वविद्यालय अपनी कीर्ति के चरम शिखर पर था। उन्होंने भी वहाँ जाकर अध्ययन तथा अध्यापन किया तथा ध्यान मुद्रा व योग एवं साधना का सहारा लिया। कुछ वर्षों बाद तिब्बत के सम्राट ने अनुभव किया कि भारत से आये हुए बौद्ध भिक्षु शांतिरक्षित धर्म के प्रचार में आ रही बाधाओं के कारण अपने कार्य में सफल नहीं हो रहे हैं। अतः इस सन्दर्भ में उन्होंने गुरु पद्मसम्भव के पास अपने दूत भेजे। गुरु जी ने तिब्बत जाना तो स्वीकार कर लिया, परन्तु उससे पहले उन्होंने तपस्या तथा साधना की जरूरत का अनुभव किया। अतः वर्तमान मण्डी जिले के रिवाल्सर नामक स्थान पर पहुँच कर पवित्र सरोवर के किनारे तथा उससे भी आगे गुफाओं में अपनी निरन्तर साधना की। उससे उसकी ज्ञान शक्ति में अपार वृद्धि हुई तथा वहाँ के राजा की पुत्री मन्दावा उसकी शिष्य बनी।

कालान्तर में गुरु पद्मसम्भव वहाँ से तिब्बत गये और उन्होंने महायान के प्रचार हेतु वज्रयान तथा मन्त्रयान की एक विशेष नई शक्तिशाली पद्धति की स्थापना की। इस प्रक्रिया में उन्होंने तिब्बत में बुद्ध धर्म के अनेक विरोधियों का दमन करने में सफलता पाई। तिब्बत के राजा ठिसोड् दचाड् (शासनकाल 755 से 795 ई०) ने बुद्ध धर्म के प्रचार में विशेष रूचि दिखाई थी। अतः उन्होंने गुरु पद्मसम्भव का विशेष स्वागत किया। उनकी देख रेख में लहासा के विशाल बुद्ध मन्दिर साम्ये के निर्माण के कार्य की योजना 747 वीं ई० में लहासा पहुँचने पर बनाई। गुरु पद्मसम्भव की इस सफलता से धर्म प्रचार में बहुत सहायता मिली। साम्ये विहार लगभग दो वर्ष बाद अर्थात् 749 में बनाना आरम्भ हुआ और 787 में बनकर सम्पन्न हुआ। इस विशाल विहार के निर्माण से वहाँ के अन्धविश्वासी बौद्ध धर्म के अनुयायियों को गहरा धक्का लगा। एक के बाद अनेक

विहार बनते गए तथा गुरु पद्मसम्भव ने तांत्रिक पद्धति की स्थापना से तिब्बत का स्वरूप ही बदल दिया। वे 802 ई० में राजा से आज्ञा लेकर तिब्बत से नेपाल की ओर चले गए। अतः वे लगभग 55 वर्ष तिब्बत में रहे।

गुरु पद्मसम्भव की शिक्षायें मूल रूप से भगवान् बुद्ध की ही शिक्षायें हैं जिन्हें लामावाद की संज्ञा दी जाती है। शान्तरक्षित जहाँ असफल हुए थे वहाँ गुरु पद्मसम्भव सफल हुए। उनके कार्य को आगे बढ़ाने में विक्रमशिला विश्वविद्यालय से आचार्य दीपांकर श्री वहाँ पहुँचे और उन्होंने इस कार्य को आगे बढ़ाया। इस प्रकार महायान में शान्तरक्षित गुरु पद्मसम्भव तथा दीपकर श्रीज्ञान त्रिमूर्ति ने तिब्बत को पूर्ण रूप से बुद्ध धर्म की दीक्षा दी। गुरु पद्मसम्भव की एक शिक्षा यह थी कि वह संसार एक सर्प की भांति है। सर्प में विष भी है और मणि भी। मूर्ख लोग माया रूपी सर्प के विष से ग्रसित होकर अपना सारा जीवन सांसारिक आकर्षणों में बिता देते हैं जबकि चतुर लोग इस माया रूपी विष को समाप्त करके अध्यात्म रूपी मणि से अपने इस लोक तथा परलोक को संवार लेते हैं।

इतने भारी योगदान के लिए गुरु पद्मसम्भव को महायान के अनुयायी “गुरु रिम्पोछे” के नाम से याद करते हैं तथा अवलोकितेश्वर बोधिसत्व के समान भगवान् बुद्ध के साथ उनकी पूजा करते हैं। जहाँ दलाई लामा जी को लामावाद की एक विशेष शाखा गेलुग्पा (पीत) का प्रवर्तक मानकर उनकी पूजा होती है वहीं गुरु पद्मसम्भव को करग्यूपा सम्प्रदाय (लाल) के प्रवर्तक के रूप में सम्मान दिया जाता है तथा उनका प्रिय मन्त्र ओम् पद्मेहुम् (जो छः अक्षरी है) हमें संसार के बंधनों से मुक्त कराता है। एक प्रथा के अनुसार गुरु जी का जन्म फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि को हुआ था। उस दिन मण्डी के पवित्र स्थान रिवाल्सर में विशेष महोत्सव मनाया जाता है। जिसे छेशु के नाम से जाना जाता है। वहाँ गुरुजी का एक विशाल प्राचीन मन्दिर है। वहाँ देश विदेश से अनेक श्रद्धालु आते हैं। यह भी कहा जाता है कि रिवाल्सर की पवित्र झील में गुरु जी की पूजा में प्रयुक्त मन्त्रों के प्रभाव से टीले भी पानी में तैरते हैं। वहाँ पर लोग मछलियों का कई प्रकार के अन्न से पोषण करते हैं।

हिमाचल सरकार ने श्री वीरभद्र सिंह के दिसम्बर 1993 में मुख्य मन्त्री बनने के बाद छेशु मेले की राज्य स्तरीय उत्सव घोषित किया है। 1995 से यह इसी रूप में मनाया जाता है। अनेक बार यहाँ पूज्य दलाई लामा तथा पंचम लामा भी आ चुके हैं। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भी इस तीर्थ की यात्रा प्रधानमन्त्री बनने से पूर्व की थी। सिक्किम, भूटान, जम्मू कश्मीर, लद्दाख, असम, अरुणाचल प्रदेश, तिब्बत तथा एशिया एवं यूरोप व अमेरिका से अनेक यात्री तथा श्रद्धालु यहाँ आकर गुरु पद्मसम्भव जी के मन्दिर में पूजा अर्चना करते हैं। तिब्बत और हिमाचल वासी तो विशेष रूप से उनकी शिक्षाओं से प्रभावित हैं। रिवाल्सर वैसे भी एक अति पवित्र तीर्थ हैं, जहाँ गुरु गोबिन्द सिंह जी की स्मृति में एक विशाल गुरुद्वारा है। लोमस ऋषि के अतिरिक्त अनेक सनातनी मन्दिर भी हैं। हिमाचल प्रदेश के पूर्व लोकप्रिय उपराज्यपाल राजा बजरंग बहादुर भट्टी (1955-1963) ने इस स्थान का महत्व बढ़ाने के लिए विशेष योगदान दिया था, जिसे लोग

आज भी याद करते हैं। हमीरपुर से लगभग 64 किलोमीटर, मण्डी से 24 किलोमीटर तथा ऊना से 114 किलोमीटर की दूरी पर स्थित रिवाल्सर का त्रिधर्म संगम गुरु रिम्पोछे, पद्मसम्भव के विशेष आकर्षण के कारण एक अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का तीर्थ स्थल बन गया है। हिमाचल प्रदेश में प्राचीन महायान विहारों मन्दिरों तथा परम्पराओं के संरक्षक प्रदेश के प्रथम मुख्य मन्त्री, हिमाचल निर्माता डॉ० यशवन्त सिंह परमार का भी इस स्थान से तथा महायान के पोषण हेतु विशेष योगदान रहा है। गुरु जी की जीवनी तिब्बती भाषा में लिखी एक विशेष पुस्तक “पेमा कातंग” के रूप में प्रसिद्ध है, जिसका संसार की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। अब इसके हिन्दी अनुवाद की योजना भी शीघ्र ही पूरी होगी, ऐसी आशा है।

* अभ्यास *

1. गुरु पद्मसंभव का जन्म कैसे हुआ ?
2. गुरु पद्मसंभव ने किस धर्म का प्रचार किया ?
3. तिब्बत में किस राजा ने गुरु पद्मसंभव का स्वागत किया ?
4. गुरु पद्मसंभव कितने वर्षों तक तिब्बत में रहे ?
5. रिवाल्सर के महत्व पर टिप्पणी लिखिये।

